International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

स्वामी विवेकानन्द के अध्यात्मिक दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों का अनुशीलन

पूजा सिंह
शोधार्थिनी, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान
डॉ. महेन्द्र सिंह
शोधनिर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य "स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों का अनुशीलन" करना है। स्वामी विवेकानन्द का आध्यात्मिक दर्शन केवल आत्मज्ञान और ईश्वरानुभूति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें शिक्षा के व्यापक, मानवीय एवं नैतिक उद्देश्यों का समावेश दिखाई देता है। उन्होंने शिक्षा को मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति का माध्यम माना तथा चरित्र–निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मानुशासन, विवेक, नैतिकता, सेवा–भाव और मानवीय मूल्यों को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण आधार माना। प्रस्तुत अध्ययन में उनके आध्यात्मिक विचारों के अन्तर्गत निहित शैक्षिक तत्वों का दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। अध्ययन में उनके साहित्य, भाषणों, पत्रों तथा शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अनुशीलन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि आध्यात्मिक चेतना व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार सहायक हो सकती है। विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व का समन्वित विकास करना है। उनके शैक्षिक दर्शन में आत्मनिर्भरता, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक उत्तरदायित्व, नारी शिक्षा तथा मानव–सेवा को विशेष महत्त्व प्राप्त है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उनके विचार मूल्यपरक, चरित्रनिष्ठ एवं समग्र शिक्षा के विकास के लिए अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

कुंजी शब्दः स्वामी विवेकानन्द, आध्यात्मिक दर्शन, शैक्षिक तत्व, चरित्र–निर्माण, सर्वांगीण विकास

भूमिका

स्वामी विवेकानन्द जी नवक्रान्तिकारी और प्रगतिशील विचारों के पोषक रहे है। उनका प्रभाव समूचे समाज और राष्ट्र पर पड़ा है। स्वामी जी एक निड़र और

साहसिक सन्यासी जिसने अपने देश, समाज और जन–कल्याण के उत्थान के लिए आजीवन प्रयत्नशील किया तथा उन्होंने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से नवयुवकों का भी आह्वान कर उनमें साहस, निडरता, शौर्य, वीरता, भरने का काम किया है। स्वामी जी का यह विश्वास था कि नवुयवक ही समाज की जीर्ण–शीर्ण और चरमराती व्यवस्था का नवनिर्माण कर सकते है। वर्तमान समय में भारत के समक्ष अनेक प्रकार की समस्यायें जिस तरह बढ़ रही है और इन समस्याओं ने उग्र रूप भी धारण कर लिया है। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शून्य का पर्दापण हो चुका है। इतना ही नहीं आज जिस तरह जनमानस, समाज में व्याप्त समस्याओं, सामाजिक कुठाराघातों और संकट युक्त वेगवती प्रचण्ड धाराओं के मध्य भयाक्रान्त, हतप्रभ एवं किंकर्तव्यविमूढ़ होकर जड़वत होकर दिशाहीन हो चुका है कि वह किस राह पर आगे बढ़े और इतना ही नहीं राजनीति भी कलुशित स्वार्थी, भ्रम और दिशाहीनता की ओर लगातार बढ़ती जा रही है ऐसे में भारतीय जनमानस ऐसी विपरीत परिस्थिति में भयावह चक्रवात में उलझता ही जा रहा है। इस दशा में देश के अस्थिर हालात एवं विधि–विधानों के उल्लंघनकारी संस्कारों के प्रवेश से यहाँ की लोकतान्त्रिक व्यवस्था भी छिन्न–भिन्न हो गयी है। इस जनतन्त्र बनाम भ्रष्टतन्त्र सम्पूर्ण भारतीय जनमानस पीड़ित, असहाय और हताश सा होता जा रहा है। स्वामी जी के आध्यात्मिक चिन्तन के द्वारा वर्तमान शिक्षा को जीवनोपयोगी मूल्यवान बनाने में सहायता प्राप्त हुई है। शिक्षा उसी प्रकार कार्य करती है, जिस प्रकार शरीर में हृदय सब अंगों को रक्त पहुँचाने का कार्य करता है। शिक्षा समाज, शासन, विज्ञान, कला, साहित्य, उद्योग आदि सभी क्षेत्रों में अपनी सृजित प्रतिभाओं के द्वारा पोषित करती है, इसीलिए स्वामी जी शिक्षा में आध्यात्मिक चेतना को शामिल करना चाहते थे। वर्तमान वैश्विक परिवर्तन से भारत को दी गयी आर्थिक उदारीकरण की परिस्थितियाँ, निजीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण नयी सहस्त्राब्दी में देश को जिन अपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है उनमें से एक महत्वपूर्ण कार्य है, देश की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना है। अतैव स्वामी विवेकानन्द जी अध्यात्मिक चिन्तन, और मूल्यों को शिक्षा संरचना में स्थापित करके वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान किया जा सकता है। वस्तुतः किसी भी समाज के लिए शिक्षा प्राण है तथा जीवन मूल्य आत्मा है, इस संक्रमण के युग में वर्तमान पीढ़ी के सम्मुख जीवन मूल्य–निर्धारण करने की समस्या है। ऐसे में स्वामी जी के आध्यात्मिक चिन्तन मूल्यों को शिक्षा में स्थान देकर अवमूल्यन रोका जा सकता है। वर्तमान शिक्षा, नवीन तकनीक के प्रादुर्भाव के कारण शिक्षा को ज्ञान तथा

दक्षताओं तक सीमित करती हैं और इसने शिक्षा प्रक्रिया को यान्त्रिक बना दिया है, शिक्षा की इस कुव्यवस्था से मुक्ति के लिए स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक चिन्तन नितान्त प्रासंगिक प्रतीत होता हैं। स्वामी जी ने सर्व शिक्षा पर बल देकर शिक्षा को निःशुल्क समान तथा सबके लिए बनाने पर बल दिया था। वर्तमान प्रचलित शिक्षा संरचना में चरित्र निर्माण तथा समग्र विकास जैसे मूल उद्‌देश्य लुप्त होते जा रहे हैं। शिक्षा से नैतिक मूल्यों के लगातार ह्रास होने के कारण बालक चारित्रिक पतन के शिकार होते जा रहे हैं, जिससे उनमें संवेदन शून्यता तथा स्वार्थपरता की भावनायें विकसित हो रही हैं। इतना ही नहीं अविश्वसनीय परीक्षा प्रणाली ने तो विद्यार्थियों से आत्मविश्वास को ही कम कर दिया है। शिक्षा में पनप रही पश्चिमीकरण की प्रवृत्ति ने तो समुचित बौद्धिक विकास पर ग्रहण लगा दिया है। इन परिस्थितियों में स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन पर आधारित आध्यात्मिक शिक्षा व्यवस्था अधिक समग्र प्रतीत होती है जो कि तकनीकी, वैज्ञानिक शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा तथा देश भक्ति की भावना पर बल देकर शिक्षा को बहुमुखी बनाने पर जोर देती है। तत्समय प्रचलित शिक्षा की दिनों–दिन गिरती हुयी स्थिति को देखते हुये स्वामी जी ने अपने शैक्षिक विचारों के आधार पर शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन करने का विचार दिया और उन्होंने एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा संस्था स्थापित करने का संकल्प लिया था। जिस पर विदेशी चिन्तन तथा संस्कृति का प्रभाव न हो और छात्र पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान को तो सीखें लेकिन उनकी सांस्कृतिक चेतना मूलतः भारतीय ही रहें। स्वामी जी के निम्न स्तर के व्यक्तियों को पहले शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे, वे उच्च वर्ग की शिक्षा और सदाचार को अछूतों और वनवासियों को भी प्रदान करना चाहते थे यही स्वामी जी के शैक्षिक दर्शन का मूलमंत्र भी था।

स्वामी विवेकानन्द के अध्यात्मिक दर्शन में निहित शैक्षिक तत्व–

स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा और अध्यात्मिक दर्शन में निहित शैक्षिक तत्व वर्तमान दशा में भारतीय समाज में व्याप्त इन समस्याओं के निराकरण में प्रासंगिक है। यदि स्वामी जी के नव चेतनामयी विचारों को समझा जाय और उनकी शिक्षाओं को आत्मसात किया जाय, तो निश्चय ही हमारा समाज एक आदर्श एवं श्रेष्ठ समाज का प्रतिरूप धारण कर सकने में सफल हो सकेगा। वर्तमान समय में स्वामी जी की शिक्षाएं किसी एक क्षेत्र के लिए न होकर समाज के सभी पक्षों से सम्बन्धित होकर दिशा–बोधित करने में सक्षम हैं। स्वामी जी की दृष्टि समग्र एवं समन्वयक होने के कारण न सिर्फ समाज के तथा कथित निम्न वर्ग के कल्याण के लिए थी, वरन्

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

तत्कालीन समाज में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ और उच्च घोषित करने वाले कतिपय दिग्भ्रमित वर्गों के कल्याण के लिए भी लाभदायक रही है। स्वामी जी के उपदेशों से भारतीय समाज में समरसता की प्रतिस्थापना करने में सहायता प्राप्त होती है। जिससे दिशाहीन समाज को एक नयी दिशा प्रदान करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। स्वामी विवेकानन्द जी के आध्यात्मिक चिन्तन शैक्षिक तत्वों को निम्न रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है, जैसे जीवनोपयोगी एवं जीवन मूल्यों का संवर्धन, शिक्षा व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण, शिक्षा में नैतिक मूल्यों की स्थापना, यांत्रिक शिक्षा संरचना से मुक्ति, शिक्षा के व्यावसायिकरण से मुक्ति, सांस्कृतिक संचेतना के विकास पर बल, वैयक्तिक भौतिकता के स्थान पर आध्यात्मिकता पर बल, सत्यान्वेशण की शिक्षा पर बल, मानव निर्माण की शिक्षा पर बल, मानवीय मूल्यों के विकास पर बल, आध्यात्मिक सामाजिक व्यवस्थाओं के निर्माण पर बल, सर्वांगीण विकास पर बल, एकाग्र चिन्तन के विकास पर बल, मातृभाषा से शिक्षा पर बल, आचार्य देवों भवः का समर्थन, सकारात्मक पाठ्यचर्या के निर्माण पर बल, लौकिक और पारलौकिक विधाओं के ज्ञान पर बल, आवश्यकतानुरूप पाठ्यक्रम पर बल, आध्यात्मिक नेतृत्व क्षमता के विकास पर बल, धार्मिक शिक्षा का समर्थन, उपयोगितावादी आध्यात्मिकता के विकास का समर्थन, तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा पर बल, व्यावसायिक शिक्षा का प्रबल समर्थन, आत्मानुषासन पर बल, प्रचलित मूल्यांकन की अवहेलना, समन्वयवादी दर्शन का समर्थन, व्यावहारिक दृष्टिकोण वाली शिक्षा का समर्थन, और महिला शिक्षा के विकास पर बल दिया था। स्वामी जी का विचार था कि– शिक्षा अछूतों तथा वन–वासियों को भी बेरोक–टोक प्राप्त हो सके और यही उनके शैक्षिक दर्शन का मूलमंत्र भी था। आज जब कि व्यक्ति भौतिकता को अपने में समेटने का कार्य कर रहा है, जबकि भौतिकता की आँधी व्यक्ति को आध्यात्मिकता से दूर लिये जा रही है, सर्वत्र पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में स्वामी जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध हो जाती है, स्वामी जी ने कहा था कि– व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो कि आध्यात्मिकता और ब्राह्मत्व से ओत–प्रोत हो तथा मानव मात्र के लिये कल्याणकारी एवं मानवीय मूल्यों को संरक्षित रखते हुये देश काल की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं की कसौटी पर खरी हो सके। आज विद्यार्थियों को सत्य बोध कराने वाली शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है। भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणाली न तो प्राचीन गुरूकुल व्यवस्था पर आधारित है, न ही परम्परागत व्यावसायिक पद्धति पर, यह भौतिकवादी शिक्षा है, जो भावी पीढ़ी को भोगवादी संस्कृति की ओर

धकेल रही है, जिससे बौद्धिक विकास के साथ नैतिकता का ह्रास हो रहा है। अतैव बदलते परिवेश में शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। स्वामी जी कहते हैं कि, हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। इस प्रकार स्वामी जी ने मानव निर्माण करने वाली शिक्षा की आवश्यकता को महसूस किया, जिससे बालकों में नैतिक भावना, सदाचार के नियम, धार्मिक भावना, व्यक्तित्व का विकास, आत्मविश्वास जागृत करने के साथ–साथ बौद्धिक विकास हेतु प्रेरित हों। जिससे मनुष्य, मनुष्य के लिए तैयार हो सके और मानवता की सेवा की जा सके। स्वामी जी ने शिक्षा के द्वारा मानव निर्माण करने वाले मूल्यों के विकास पर बल देते हुए कहा है कि– मूल्यविहीन शिक्षा निरर्थक एवं निर्जीव है इसीलिए प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा को मूल्यों पर आधारित होनी चाहिये। अतैव वर्तमान समय में नैतिक उद्देश्यपरक शिक्षा की प्रथम आवश्यकता होनी चाहिए। जिसको पूर्ण रूप से विकसित करने में विवेकानन्द के आध्यात्मिक शैक्षिक दर्शन की उपयोगिता सार्थक प्रतीत हो रही है। मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा बालकों में सहयोग, भ्रातृत्व की भावना, कर्तव्य निष्ठा, श्रम की महत्ता, सेवा भाव तथा मानवतावाद विकसित किया जा सकता है तथा क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद को कम किया जा सकता है और यह तभी सम्भव होगा जब स्वामी जी के आध्यात्मिक शिक्षा व्यवस्था का संचार जन–जन तक पहुँचाया जाय। स्वामी विवेकानन्द जी ने सामाजिक व्यवस्थाओं के निर्माण पर आध्यात्मिक शक्तियों के प्रभाव को प्राथमिकता प्रदान करने हेतु कहा है कि समाज में होने वाले प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन, आन्तरिक आध्यात्मिक शक्तियों की अभिव्यक्ति मात्र माने जाते हैं। यदि आन्तरिक आध्यात्मिक शक्तियाँ बलवती तथा संतुलित हैं, तो समाज अपनी रचना स्वयं आध्यात्मिक रीतियों से कर लेगा। आत्मनिर्भरता प्रत्येक राष्ट्र की सामाजिक व्यवस्थाओं के अस्तित्व की आधारशिला मानी जाती है और उन्हें किसी दूसरे राष्ट्र के साँचे में नहीं ढाला जा सकता क्योंकि समाज का विकास धीरे–धीरे दीर्घ कालिक प्रक्रिया के द्वारा होता है, इसीलिए पुरातन व्यवस्थाओं तथा मूल्यों को नष्ट नहीं किया जा सकता है, जब तक उससे श्रेष्ठ व्यवस्थायें तथा मूल्य न विकसित कर ली जाए। सभी व्यवस्थाओं में पूर्णता के साथ–साथ कुछ न कुछ अपूर्णता भी होती है परन्तु वास्तव में सच्चे अर्थों में वही व्यवस्था उचित तथा कल्याणकारी होती है जो विभिन्न व्यवस्थाओं के अन्तर्गत रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उसकी अपूर्णताओं पर विजय प्राप्त कर उन्नति करने में

सहायता पहुँचाए, क्योंकि विनम्र व्यक्ति अनुचित प्रथाओं तथा नियमों की उपेक्षा करते हैं तथा उनका स्थान प्रेम, सहानुभूति, प्रमाणिकता पर आधारित सशक्त नियम ले लेते हैं। इसीलिए स्वामी जी ने सामाजिक प्रथाओं और व्यवस्थाओं के निर्माण के लिए आध्यात्मिक तत्वों के आलम्बन पर बल दिया है जो कि वर्तमान में भी प्रासंगिक है। स्वामी जी के विचार में प्रचलित शिक्षा के प्रमुख उद्‌देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए, क्योंकि सत् पुरूष वे होते हैं जो प्रत्येक परिस्थिति में रहने वाले अपने साथियों को उन्नति करने में सहायता प्रदान करते हैं क्योंकि व्यक्ति में सहयोगात्मक प्रकृति का विकास केवल आध्यात्मिक तथा मूल्यपरक शिक्षा द्वारा ही सम्भव है, जिसकी आवश्यकता स्वामी जी ने समझी और कहा कि ऐसी शिक्षा से मानव निर्माण पर बल दिया जाता है इसीलिए स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का उद्‌देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द जी ने अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया में भारत की परम्परावादी दृष्टिकोण का समर्थन किया है। उन्होंने विद्यार्थियों को विषय की गहनता प्राप्त करने के लिए एकाग्र चिन्तन पर बल दिया है, जो कि सभी प्रकार की शिक्षा का केन्द्र बिन्दु माना जाता है। एकाग्र चिन्तन से अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि इससे चिन्तन तथा तर्क शक्ति का विकास होता है, जिस पर आधारित परिणाम व्यक्ति को सही दिशा की ओर ले जाते हैं तथा विषय की गहनता समझते हैं स्वामी विवेकानंद जी ने बालकों में एकाग्र चिन्तन विकसित करने हेतु शिक्षण में योग साधना की उपयोगिता पर बल दिया तथा पाठ्‌यक्रम में भी सम्मिलित करने का सुझाव दिया है। साथ ही स्वामी जी ने क्रिया एवं व्यावहारिक शिक्षण विधियों का भी समर्थन किया और उपदेश विधि को भी अपनाने का सुझाव दिया है। स्वामी जी द्वारा निर्धारित उपदेश विधि ही वर्तमान समय में व्याख्यान विधि के नाम से जानी जाती है। यदि उनके द्वारा स्वीकृत केन्द्रीकरण की शिक्षण विधियों को अपनाया जाये तो शिक्षा सुलभ हो जायेगी। इस प्रकार स्वामी जी की शिक्षण विधियों की भी आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता प्रतीत होती है। विवेकानन्द जी ने मातृभाषा द्वारा शिक्षा प्रदान किये जाने पर बल दिया था। स्वामी जी ने शिक्षकों के स्वार्थ की परिधि से निकलकर कर्तव्य भावना से युक्त होकर, शिक्षण के प्रति समर्पित भाव से छात्रों को अपने ज्ञान के अनुभव से शिक्षा का अवदान करना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द जी विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार पाठ्‌यचर्या के निर्माण पर बल दिया है। स्वामी जी के अनुसार विद्यालय में किसी मत या सम्प्रदाय की शिक्षा न देकर सभी धर्मों के सारभूत तत्वों की जानकारी दी जानी चाहिए और पाठ्‌यक्रम में

सत्यता का भी समावेश किया जाना चाहिए और उन्होंने पाठ्यक्रम में शारीरिक प्रशिक्षण को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है, क्योंकि नवयुवकों को बलवान बनाने के लिये शिक्षा में शारीरिक प्रशिक्षण आवश्यक माना जाता है। इस प्रकार स्वामी जी के पाठ्यचर्या निर्माण के प्रति विचार वर्तमान में प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। स्वामी जी ने शिक्षा द्वारा मनुष्य को लौकिक और पारलौकिक दोनों जीवनों के लिये तैयार करने पर बल दिया था। इसके साथ ही साथ स्वामी जी ने नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान दिये जाने पर विशेष बल दिया है। स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा संरचना के आमूल–चूल परिवर्तन के पक्षधर रहे। उन्होंने आध्यात्मिकता के विकास के लिए शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया और कहा कि प्रचलित पाठ्यक्रम को वर्तमान समय में प्रचलित प्रणाली के ढाँचे में ही चलने वाली विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं को ही आध्यात्मिकता से पोषित करके उनकी क्षमताओं तथा साधनों का उपयोग युवाओं में आध्यात्मिक नेतृत्व के विकास के लिए नैतिक रूप से प्रेरणादायी हो सकते हैं। जनकल्याण के लिए जनशिक्षा के प्रसार में ऐसे लोगों में सहायता की अपेक्षा की जाती है। जो स्थानीय बालक, बालिकाओं की सहायता से उनके खाली समय में रात्रिकालीन कक्षायें, व्यायामशाला, पुस्तकालय तथा श्रव्य–दृश्य सामग्री की सहायता से व्याख्यान प्रदान करने में सहायता दे सके। साथ ही साथ विद्यालयों में प्रदर्शनियों तथा स्वस्थ स्पर्धाओं का आयोजन करे। ऐसे पेशेवर शिक्षित और योग्य व्यक्ति अपने पड़ोस में स्थित अनेक प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों को मार्गदर्शन, नियन्त्रण तथा प्रेरणा प्रदान कर सकता है जिसमें जन शिक्षा के लिये अन्य को भी प्रेरणा प्रदान किया जा सकता है। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को पूरा करने के लिये ऐसी मॉडल संस्थाओं की स्थापना किया जाये या प्रचलित संस्थाओं में से मॉडल संस्था का चुनाव करना चाहिये जिसमें मनुष्य निर्माण करने वाली शिक्षा प्रदान की जाय तथा उनसे निकले हुये युवक राष्ट्रीय चेतना के अनुरूप आध्यात्मिक तथा सामाजिक नेतृत्व प्रदान कर सके। साथ ही दूसरों के लिये मॉडल के रूप में कार्य कर सकने में सक्षम हो। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार किसी भी देश का विकास महिलाओं की शिक्षा पर आधारित है, क्योंकि इससे भावी पीढ़ी को मूल्यवान तथा उचित निर्देशन उन्हीं के द्वारा प्रदान किया जाता है। स्वामी विवेकानंद जी के जनसाधारण की शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता इस बात से पूर्णतया स्पष्ट है कि जब तक प्रत्येक नागरिक को शिक्षित नहीं किया जायेगा तब तक राष्ट्रोन्नति व शिक्षोन्नति सम्भव नहीं हो सकता है। स्वामी जी ने अपने चिन्तन के द्वारा जिन सार तत्वों को प्राप्त किया था उनमें आध्यात्मिकता की उपयोगितावादी नियम जो समाज की

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

वर्तमान स्थिति में उपयोगी माना जा सकता है। अतैव स्वामी जी की यह विचारधारा आध्यात्मिक तथा उपयोगितावादी संस्कृति में समन्वयात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में प्रासंगिक है। स्वामी जी ने विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए एक ओर तो आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा पर बल दिया है तो दूसरी ओर तनकीकी, वैज्ञानिक और कौशलता की शिक्षा के विकास की भी आकांक्षा प्रकट की है। इस दृष्टिकोण से स्वामी जी की आध्यात्मिक चिन्तन की यह धारा यहाँ भी प्रासंगिक प्रतीत होती है। स्वामी जी ने कहा है कि आत्मनियन्त्रित अनुशासन विद्यार्थियों को स्वयं संयमित रखने की प्रेरणा प्रदान करता है जिससे शिक्षा के द्वारा ही मानव में आत्मनियन्त्रण की शक्ति उत्पन्न होती है और उसका व्यवहार आन्तरिक प्रेरणाओं के द्वारा निर्धारित होता है। स्वामी जी वर्तमान में प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली से काफी आहत थे उनका कहना था कि वर्तमान परीक्षा पद्धति में व्यावहारिक और प्रमाणिकता की कमी है इसे केवल एकांगी कहा जा सकता है। अतः ऐसी परीक्षा की आवश्यकता है जो बालक के सर्वांगीण विकास का परीक्षण कर सके। इस प्रकार स्वामी जी की मूल्यांकन दृष्टि वर्तमान में उतनी ही प्रासंगिक है जितनी की उस समय महसूस की जाती थी।

उपसंहार–

स्वामी विवेकानन्द जी आदर्शवादी दार्शनिक विचारधारा के समर्थक है, परन्तु वे अपने आपको किसी एक विचारधारा से बाँधकर नहीं रखते, वे अपने जीवन दर्शन विस्तृत और समन्वयवादी प्रस्तुत किया है। स्वामी जी ने इसमें सभी प्रकार के आध्यात्मिक, भौतिक तथा वैज्ञानिक पक्षों का समावेश किया है तथा उन्होंने अपने वेदान्त दर्शन को आधार बनाकर अपने शैक्षिक विचारों को समाज के सम्मुख अध्यात्मिकता के प्रस्तुत करने का कार्य किया है। यद्यपि जन–सामान्य धारणा यह है कि उनके शैक्षिक विचार बुद्धि जीवियों तक ही सीमित रह गये हैं और यही उनकी संकीर्णता का परिचायक भी है। परन्तु यह भी सत्य है कि उनकी वेदान्त पर आधारित अध्यात्मिक शिक्षा दर्शन मानव के सर्वांगीण जीवन हेतु उचित है। स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद तथा अन्य दार्शनिक विचारधाराओं का समन्वय प्राप्त होता है। स्वामी जी की शिक्षा का मुख्य उद्‌देश्य बालक का आध्यात्मिक विकास करके उसके पूर्णत्व की अभिव्यक्ति करना रहा है। उनके अनुसार शिक्षा मानव में पहले से ही उपस्थित पूर्णता की अभिव्यक्ति है, उनके शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें आध्यात्मिकता का भी सुन्दर समन्वय है, जो आज के युग की माँग है। उनका शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण आधुनिक

शिक्षा के लिए प्रासंगिक है। उनके अनुसार चरित्र निमात्री शिक्षा ही राष्ट्र में सहयोग दे सकती है तथा स्वामी जी ने कहा है कि शिक्षा द्वारा बालक के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास पर आधारित व्यावसायिक विकास पर बल देने को कहा है तथा भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में इस प्रकार ताल–मेल बैठाकर शिक्षा का सही उद्‌देश्य निर्धारित करने पर बल दिया तथा आधुनिक शिक्षा को नयी दिशा प्रदान करने का कार्य किया है। जैसा कि शंकराचार्य जी ने विवेक चूड़ामणि में कहा है–

''शान्ता महन्तो निवसंति संतो, वसंतवत् लोक हितं चरन्तः।
तीर्णाः स्वयं भीमभवार्णवं, जनान्अहेतुनान्यान् अपितारयन्तः।।''

(विवेक चूड़ामणि, 37–38)

कुछ ऐसे महान सन्त होते हैं, जो बसन्त ऋतु की तरह संसार का कल्याण करते हैं, वे स्वयं तो संसार सागर पार कर चुके होते हैं, वे अन्यों को भी निस्पृह मन से इसे पार करवाते हैं।

''अयं स्वभाव स्वत् एवं यत् पर।
श्रमापनोद प्रवणं महात्मनाम्।''

(विवेक चूड़ामणि, 37–38)

सन्त पुरूषों का यही स्वभाव होता है कि वे आत्म प्रेरित होकर लोगों का कष्ट मिटाते हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वामी जी ने आध्यात्मिक शैक्षिक चिन्तन को मानव निर्माण की शिक्षा का आधार माना है तथा इसके अन्तर्गत मानव के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास के साथ–साथ सीखना–सिखाना आदि गुण शामिल किया है। स्वामी जी के आध्यात्मिक चिन्तन के द्वारा ही बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास किया जा सकता है, जिसके अन्तर्गत शिक्षा का उद्‌देश्य बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव हो पाता है। इसी सन्दर्भ में **श्री रामकृष्ण परमहंस** ने भी कहा है कि–शिक्षा का उद्‌देश्य है, प्रत्येक बालक में शिक्षा के द्वारा पारदर्शिता का विकास हो अर्थात् जिससे वह स्वयं तथा दूसरे के मध्य अन्तर स्थापित कर सकता है। स्वामी जी का वेदान्तवादी अध्यात्मिक दर्शन तथा शैक्षिक विचारधारा अधिक प्रभावशाली प्रतीत होता है। **आर. वेंकट रमन** ने स्वामी जी के शैक्षिक चिन्तन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि स्वामी जी की शिक्षा मानव जीवन निर्माण तथा चरित्र निर्माण

करने वाली है। क्योंकि उनकी शिक्षा मानव में छिपी हुई अभिव्यक्तियों को गतिशीलता प्रदान करने में सहायक होती है।

इस प्रकार स्वामी विवेकानंद जी के आध्यात्मिक चिन्तन से अभिसिंचित शिक्षा संरचना में नैतिकता, सामाजिक, आध्यात्मिकता तथा आत्म–अनुशासन प्रेरित करने वाले तत्वों को समावेशित किया गया है। स्वामी जी की यह शिक्षा वर्तमान समस्याओं जैसे–भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, आतंकवाद, विकृत मानसिकता, चारित्रिक दुर्बलता को निराकरित करने में सक्षमता को इंगित करती है, क्योंकि वर्तमान परिस्थिति में जहाँ समाज नैतिक अवमूल्यन तथा अनुशासनहीनता, संवेदनशीलता, बेरोजगारी से ग्रसित है, वहीं स्वामी जी ने सहनशीलता, सद्भावना, सहयोग, चारित्रिक विकास, नैतिकता के विकास को सर्वप्रथम शिक्षा का उद्देश्य स्थापित किया। अतैव वर्तमान समय में भी स्वामी की आध्यात्मिक संचेतना और नैतिक मूल्यों के साथ–साथ वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान की नितान्त आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची –

1. हरिनारायण स्वामी (1958)– भारत में आध्यत्मिक चिन्तन का विकास की दशा, राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ।

2. लाल. रमन बिहारी (2014–15) शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार, आर० लाल बुक डिपो. मेरठ।

3. सिंह, अमरजीत (2024) अध्यात्म दर्शन के प्रणेता स्वामी विवेकानद. प्रभात पेपर वैवस, नई दिल्ली।

4 राष्ट्र जीवन की दिशा, (1971)लोकहित प्रकाशन, लखनऊ।

5 राष्ट्र जीवन की समस्या (1968) राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन नई दिल्ली

6. कुलकर्णी शरद अनन्त स्वामी(1958)विवेकानन्द विचार दर्शन (खण्ड 4). एकात्म अर्थनीति, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली।